

## रचनात्मक लेख

वैचारिक और भावनात्मक रूप से रचना करना एवं अपने मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति करना रचनात्मक लेखन कहलाता है।

सुझाव: प्रश्न संख्या 7 रचनात्मक लेखन होगा | रचनात्मक लेख समय निम्न सुझाव आपके लिए कारगर होंगे |

- रचनात्मक लेखन में विद्यार्थियों को अपने विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति करनी है।
- विचारों में क्रमबद्धता आवश्यक है।
- रचनात्मक लेखन में उद्धरण उपयोगी होते हैं अतः उद्धरणों का प्रयोग करें। उद्धरण लिखते समय उद्धरण चिन्ह (“----”) जरूर लगाना चाहिए।
- रचनात्मक लेखन से पूर्व अपने विचारों को संक्षिप्त बिन्दुओं या शीर्षकों में बांट लें ताकि लेखन आसान हो सके।
- विषयानुकूलता व रोचकता का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- रचनात्मक लेखन से पूर्व सभी विकल्पों पर विचार कर उपयुक्त विकल्प का चुनाव करें।
- आप रचनात्मक लेखन के हिस्से को तीन भाग में विभाजित कर लें। (क) विषय का परिचय (ख) विषय का विस्तार (ग) निष्कर्ष
- रूपरेखा-लेखन के समय पूर्वापर संबंध के नियम का निर्वाह किया जाए, पूर्वापर संबंध के निर्वाह का अर्थ है कि ऊपर की बात उसके ठीक नीचे की बात से जुड़ी होनी चाहिए, जिससे विषय का क्रम बना रहे।
- भाषा सरल, सहज और बोधगम्य हो
- पुनरावृत्ति दोष से बचा जाए।
- शब्द सीमा 150 शब्द सी.बी.एस.सी.द्वारा निर्धारित की गई है। अतः शब्द सीमा का ध्यान रखें एवं अनावश्यक बातें लिखने से बचें।

रचनात्मक लेखन में निम्न प्रश्नों के उत्तर तलाश करें ----

- समस्या क्या है?
- समस्या क्यों है?
- समस्या का प्रभाव – लाभ / हानि
- उपाय /सुझाव /प्रयास
- उपसंहार

रचनात्मक लेखन के प्रारूप का निर्वहन निम्न प्रकार होना चाहिए-

1. आरम्भ (विषय का परिचय) अंक-1
2. विषय का महत्व (महत्व, प्रासंगिकता ) अंक-3
3. निष्कर्ष अंक 1

## रचनात्मक लेखन के उदाहरण

### **मेरे जीवन का लक्ष्य**

जीवन एक अंतहीन यात्रा है। जिस प्रकार यात्रा प्रारंभ करने से पहले व्यक्ति अपना गंतव्य स्थान निर्धारित कर लेता है, वैसे ही हमें भी अपनी जीवन-यात्रा प्रारंभ करने से पहले अपना कार्य-क्षेत्र निर्धारित कर लेना चाहिए। हर इंसान को अपने जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य निश्चित कर लेना चाहिए। लक्ष्यहीन जीव स्वच्छंद रूप से सागर में छोड़ी हुई नाव के समान होता है। ऐसी नौका या तो लहरों के मध्य डूब जाती है या चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जाती है। मैंने भी अपने जीवन में प्रशासनिक अधिकारी बनने का निश्चय किया है। मैं उस कर्म को श्रेष्ठ समझता हूँ, जिससे व्यक्ति अपना व अपने परिवार का तो कल्याण कर ही सके, साथ ही समाज को भी दिशा-निर्देश दे सके। प्रशासनिक अधिकारी का कार्य भी कुछ इसी प्रकार का है। वह समाज के कार्यों का सुचारु संचालन करता है, लोगों तक सरकारी योजनाओं को पहुंचाता है और समाज को एक विकास की नई दिशा प्रदान करता है। इस समाज में प्रशासन को चलाने के लिए व्यक्ति की योग्यता को तब तक सार्थक नहीं समझता जब तक वह समाज के लिए लाभदायक न हो। प्रशासनिक अधिकारी यह कार्य करने की सर्वाधिक क्षमता रखता है। मेरा विश्वास है कि समाज में समुचित विकास के बिना कोई भी नागरिक न अपने अधिकारों को सुरक्षित रख सकता है और न कभी दूसरों के अधिकारों का सम्मान कर सकता है। मैं एक प्रशासनिक अधिकारी बनकर समाज के लोगों को शिक्षा, चिकित्सा, विकास को जीवनोपयोगी बनाने का प्रयत्न करूंगा। मैं मेरे कार्य क्षेत्र परिसर के बाहर भी समाज के लोगों के साथ अत्यंत निकट का संपर्क स्थापित करूंगा और समाज के प्रत्येक वर्ग को भविष्य की नई सम्भावनाओं की दिशा एवं दशा प्रदान करने का प्रयत्न करूंगा। मैं सदैव अपने सद्व्यवहार द्वारा समाज में श्रेष्ठ भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न करूंगा एवं अपने कर्तव्यों का पूर्ण ईमानदारी के साथ निर्वहन करूंगा।

### **जीवन में खेलों का महत्व :-**

खेल-कूद में रुचि बढ़ना देश के स्वास्थ्य का प्रतीक है, देशवासियों की समृद्धि का सूचक है। आजकल खेलों के प्रति दीवानगी बढ़ती जा रही है। इस दीवानगी को देखते हुए यह प्रश्न उठना लाजिमी है कि क्या यह भी स्वस्थ परंपरा का प्रतीक है? इसमें कोई दो राय नहीं कि पोषक भोजन के बिना मानव स्वस्थ नहीं रह सकता। यह भी उतना ही सच है कि अच्छे भोजन के साथ यदि मनुष्य खेलों में भाग न ले तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता। अतः खेलों का नियमित अभ्यास करना स्वास्थ्य के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि संतुलित भोजन। वैसे तो जीवन की सफलता के लिए शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों में से कोई भी एक शक्ति किसी से कम महत्वपूर्ण नहीं है। फिर भी आम

जनमानस में प्रचलित उक्ति है कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है'। इसलिए शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ व चुस्त बनाने के लिए कई प्रकार के शारीरिक अभ्यास किए जाते हैं, किंतु इनमें खेल-कूद सबसे प्रमुख हैं। बिना खेल-कूद के जीवन अधूरा रह जाता है। कहा गया है-"सारे दिन काम करना और खेलना नहीं, यह होशियार को मूर्ख बना देता है।" अतः खेलों से हमारा जीवन अनुशासित और आनंदित होता है। खेल भावना के कारण खिलाड़ी सहयोग, संगठन, अनुशासन एवं सहनशीलता का पाठ सीखते हैं। खेलने वालों में संघर्ष करने की शक्ति आ जाती है। खेल में जीतने की दशा में उत्साह और हारने की स्थिति में सहनशीलता का भाव आता है। खेलते समय खिलाड़ी जीत हासिल करने के लिए अनुचित तरीके नहीं अपनाता और पराजय की दशा में प्रतिशोध की आग में नहीं जलता। उसमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भाव होता है। खेल मनोरंजन का माध्यम भी हैं। खिलाड़ियों अथवा खेल-प्रेमियों-दोनों को खेलों से भरपूर मनोरंजन मिलता है। जो लोग सदैव काम में लगे रहते हैं खेलों के मनोरंजन से वंचित रह जाते हैं वे खेलों से मनुष्य अनुशासित जीवन जीना सीखता है। इससे मनुष्य नियमपूर्वक कार्य करने की शिक्षा लेता है। नियमपूर्वक कार्य करने से व्यवस्था बनी रहती है तथा समाज का विकास होता है। इस प्रकार खेलों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ये हमारे जीवन को संपन्न व खुशहाल बनाते हैं। इनके महत्व को देखते हुए हमें खेलों से अरुचि नहीं रखनी चाहिए।

### अभ्यास के लिए अन्य रचनात्मक लेख

1. वृक्ष लगाना मेरा शौक
2. बदलते जीवन मूल्य
3. रास्ते में बस खराब होना
4. कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ/ देश की प्रगति में महिलाओं का योगदान
5. राष्ट्र-निर्माण में युवा पीढ़ी का योगदान
6. इंटरनेट का मेरे जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव
7. महानगरीय जीवन की चुनौतियां
8. लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका
9. महानगरीय जीवन की चुनौतियां
10. सीमा पर बढ़ते तनाव को कम करना
11. आज विश्व में भारत की प्रतिष्ठा
12. काला धन : एक सामाजिक कलंक
13. पर्यावरण संरक्षण: आज की आवश्यकता
14. आनलाइन शोपिंग का बढ़ता चलन
15. भारत से प्रतिभा पलायन
16. गिरते नैतिक मूल्यों के कारण